

# पाँचवा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन, अमेरिका (न्यू यॉर्क)

अक्टूबर, 20-21, 2023

आयोजन स्थल: भारतीय कोंसला वास, 3 ईस्ट, 64 स्ट्रीट, न्यू यॉर्क, एन वाई 10065

## उद्घाटन समारोह

गत 20 अक्टूबर को अमेरिका के न्यू यॉर्क स्थित भारतीय कोंसलावास के मुख्य सभागृह में प्रधान कोंसुल माननीय रणधीर जायसवाल ने पाँचवे अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन किया। अपने संबोधन में श्री जायसवाल ने अमेरिका में हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए अपना समर्थन देने की घोषणा की, साथ ही कहा कि भारत सरकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी शिक्षण के महत्व को समझती है और हिंदी प्रचार के हर प्रयास का समर्थन करती है।

इस दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन न्यू जर्सी की हिंदी संगम फ़ाउंडेशन नामक गैर सरकारी शैक्षणिक संस्था ने किया था। सम्मेलन के आयोजन में भारतीय कोंसलावास के अलावा अमेरिकन काउन्सिल ऑन द टीचिंग ऑफ़ फ़ॉरेन लैंग्विजेज़ (एक्टफ़ेल), न्यू यॉर्क यूनिवर्सिटी, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (भारत), इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली, न्यू जर्सी, अमेरिका की युवा हिंदी संस्थान, न्यू यॉर्क की शिक्षायतन, श्री निकेतन, तथा अनेक सामुदायिक और शैक्षणिक संस्थानों ने सहयोग किया। सम्मेलन में अमेरिका के अनेक विश्व विद्यालयों के हिंदी शिक्षकों सहित यूरोप, एशिया, विशेष तौर पर भारत के हिंदी विशेषज्ञ शामिल हुए। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के लगभग आधे दर्जन हिंदी शिक्षकों तथा शोधार्थियों ने ऑन साइट या ऑनलाइन प्रस्तुतियाँ दीं।

उद्घाटन समारोह की शुरुआत करते हुए चैन्सरी प्रमुख सुमन सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और जर्सी सिटी पब्लिक स्कूल की शिक्षिका नीना सरिन को समारोह की कार्रवाई आगे बढ़ाने के लिए आमंत्रित किया। नीना ने प्रमुख अतिथियों, कोंसलाधीश रणधीर जायसवाल, आयोजन समिति प्रमुख पूर्णिमा देसाई, अकादमिक समिति प्रमुख प्रो गैब्रिएला इलेवा, सम्मेलन के संयोजक अशोक ओझा, केंद्रीय हिंदी संस्थान निदेशक डॉक्टर सुनील कुलकर्णी, विश्व हिंदी सचिवालय की महा सचिव माधुरी रामधारी और न्यू जर्सी भारतीय समुदाय के प्रतिनिधि पीयूष पटेल को दीप प्रज्वलन के लिए आमंत्रित किया। दीप प्रज्वलन के बाद स्कूल छात्रा समन्वि मटूपूजू ने गणेश वंदना नृत्य प्रस्तुत किया।

आयोजन समिति प्रमुख पूर्णिमा देसाई ने प्रधान कोंसुल श्री जायसवाल को शाल और स्मृति चिन्ह भेंट कर उनका स्वागत किया। अपने संबोधन में श्रीमती देसाई ने प्रधान कोंसुल को सम्मेलन के आयोजन में सहभागी होने के लिए धन्यवाद दिया। हिंदी संगम फ़ाउंडेशन की तरफ़ से जिन अतिथियों को शाल और स्मृति चिन्ह के साथ सम्मानित किया गया वे हैं : प्रो गैब्रिएला इलेवा, प्रो राजीव रंजन (मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी), डॉक्टर सुनील कुलकर्णी, डॉक्टर माधुरी रामधारी, पीयूष पटेल, उपेन्द्र चिवुकुला, और प्रो आनंद शर्मा (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)। अशोक ओझा ने मुख्य वक्ता आकाश पटेल (ACTFL) को शाल और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

अशोक ओझा ने सम्मेलन की रूप रेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य हिंदी शिक्षण को विस्तारित करना है और स्कूल तथा विश्वविद्यालयों की हिंदी शिक्षा के बीच खाई को पाटना है। सम्मेलन का मुख्य विषय था: “हिंदी शिक्षण में नवीनताएँ (शिक्षण पद्धति, प्रायोगिकी एवं अन्य सम्बंधित विषय): साधन, वातावरण और चुनौतियाँ”।

पीयूष पटेल ने सम्मेलन के आयोजन के लिए आयोजकों को बधाई दी और कहा कि इस तरह के आयोजनों से हिंदी भाषा और मज़बूत होगी। युवा हिंदी संस्थान के सभापति उपेन्द्र चिवुकुला ने हिंदी को भारतीयों की पहचान बताते हुए कहा कि भारतीय मूल के लोगों को हिंदी शिक्षण से जुड़ना चाहिए।

डॉक्टर माधुरी रामधारी ने हिंदी शिक्षण के आधुनिकीकरण पर ज़ोर देते हुए कहा कि आज के शिक्षार्थियों की ज़रूरतों को ध्यान में रख कर हिंदी शिक्षण को ग्राह्य बनाना ज़रूरी है ताकि वर्तमान पीढ़ी हिंदी सीखने के लिए आकर्षित हो।

अमेरिकन कौंसिल ऑन टीचिंग फ़ॉर रैन लैंग्विजेज़ (ACTFL) के अध्यक्ष और सम्मेलन के मुख्य वक्ता आकाश पटेल ने भारतीय माता पिता को सलाह दी कि वे अपने बच्चों को शिक्षक बनने के लिए प्रेरित करें। “आज के इस मुश्किल समय में भाषा शिक्षक ही आपसी टकराव और वैमनस्य की भावना को दूर करने में समर्थ हो सकते हैं”, उन्होंने कहा। पटेल के मुख्य वक्तव्य के बाद शुभ्रा प्रकाश ने ‘फ़ाँटवाला’ मंच नाटिका प्रस्तुत की जिसके बाद डॉक्टर बिजोय मेहता की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। अमेरिका के विभिन्न नगरों से आए दर्जनों कवियों ने कवि सम्मेलन में अपनी कविताएँ पढ़ीं। समारोह का समापन सामूहिक भोज से हुआ।

### सम्मेलन के दूसरे दिन, अक्टूबर 21, की गतिविधियाँ

सम्मेलन के दूसरे दिन, शनिवार अक्टूबर 21 को कोंसलावास के दो सभागृहों में ‘हिंदी शिक्षण में नवीनताएँ’ विषय से संबंधित दस पैनल प्रस्तुतियाँ हुईं। इनमें से कई ऑनलाइन भी थीं। प्रो राजीव रंजन ने प्रमुख सत्र में हिंदी शिक्षण के विषय में चर्चाओं की शुरुआत की जिसमें उन्होंने भाषा शिक्षकों के प्रशिक्षण पर ज़ोर दिया। एक सत्र में वर्ष 2022 में सम्पन्न युवा हिंदी संस्थान फुल ब्राइट-हेस ग्रुप परियोजना के तहत भारत दौरे से सम्बंधित चार प्रस्तुतकर्ताओं, पैट्रिका सभरवाल, अनुभूति काबरा, नीना सरीन और ममता त्रिपाठी ने अपने अनुभव सुनाए। उन्होंने कहा कि भारत के शैक्षणिक दौरे के बाद उन्हें सतत पारम्परिक तौर तरीकों के बारे में सीखने को मिला जिसके आधार पर उन्होंने हिंदी पाठ्यक्रम गढ़ने की नवीन पद्धतियों पर कार्य किए।

अनूप भार्गव एवं प्रो रेखा सेठी ने ‘कृत्रिम बुद्धि’ की उपयोगिता पर अपने विचार प्रस्तुत किए और बताया कि आने वाले समय में अनुवाद और संप्रेषण की दुनिया में ‘अर्टीफिसियल इंटेलीजेंस’ का महत्वपूर्ण योगदान होने वाला है। कुछ विशेषज्ञों ने हिंदी के साथ अन्य भाषाओं, जैसे पुर्तगाली, असमिया आदि के सम्बन्धों की चर्चा की। प्रो प्रियंका सोनकर ने अपनी ऑनलाइन प्रस्तुति में काशी हिंदू विश्व विद्यालय में विदेशी विद्यार्थियों को भाषा और संस्कृति की शिक्षा की बारीकियों पर प्रकाश डाला। पुर्तगाल के शिव कुमार सिंह, ओसाका विश्वविद्यालय के वेद प्रकाश सिंह तथा तेज़पुर के अनुशब्द ने हिंदी और पुर्तगाली, जापानी, असमिया भाषाओं के पारस्परिक रिश्तों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा की। सागर देसले ने ऑनलाइन प्रस्तुति दी। न्यू यॉर्क की सुषमा मल्होत्रा, बॉस्टन यूनिवर्सिटी की शिल्पा परनामी, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफ़ोर्निया, बर्कले से आयी नोरा कोआ, कोपेनहेगन के एल्मर रेनर, कॉर्नेल की सुजाता सिंह और पेन् स्टेट यूनिवर्सिटी की रिंतु जयकर ने भी प्रस्तुतियाँ दीं। चंद्रिका दस का विषय ‘राजस्थान में राम कथा’ था तो सोमा व्यास ने ‘हिंदी की लोकप्रियता’ पर अपनी प्रस्तुति दी, जब कि विनीता सिन्हा ने अपनी ऑनलाइन प्रस्तुति में सांस्कृतिक प्रदर्शन को विषय बनाया था।

## सम्मेलन में सर्व सम्मति से पारित प्रस्ताव:

### ‘न्यू जर्सी में हिंदी केंद्र स्थापित हो।’

सम्मेलन के समापन समारोह में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव में भारत सरकार से मांग की गयी कि भारतीय मूल के प्रवासियों के गढ़ न्यू जर्सी में ‘हिंदी केंद्र’ की स्थापना की जाय। इस केंद्र का प्रबंधन हिंदी संगम फ़ाउंडेशन करेगा जिसमें हिंदी शिक्षण के लिए अनेक प्रकार के संसाधनों का संग्रह होगा। केंद्र पश्चिमी गोल्डार्थ में हिंदी शिक्षण के प्रचार-प्रसार के लिए संसाधन केंद्र की भूमिका निभाएगा।

प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए सम्मेलन के संयोजक अशोक ओझा ने कहा कि ‘हिंदी केंद्र’ की स्थापना से कैरीबियन देशों, दक्षिण अमेरिका के देशों, जैसे, गयाना, सूरीनाम, ब्राज़ील आदि में हिंदी शिक्षण को बढ़ावा देने का कार्य किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि न्यू यॉर्क के भारतीय कोंसलावास के सहयोग से आयोजित पूर्ववर्ती सम्मेलनों में भी इसी आशय के प्रस्ताव पारित किए जा चुके हैं और अब समय आ गया है कि भारत सरकार इस कार्य को प्रारंभ करे। केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक डॉक्टर सुनील कुलकर्णी, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव माधुरी रामधारी, इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली की प्रो रेखा सेठी ने भी प्रस्ताव का समर्थन किया। चैन्सरी प्रमुख सुमन सिंह ने आश्वासन दिया कि वे सम्मेलन की भावना का आदर करती हैं तथा इस प्रस्ताव को अनुमोदित करते हुए भारत सरकार के पास भेजेंगी।

### आधे-अधूरे का मंचन

सम्मेलन का समापन मोहन राकेश द्वारा रचित ‘आधे-अधूरे’ नाटक के मंचन से हुआ। नाटक की निदेशिका संध्या भगत के कार्यों की सराहना करते हुए वरिष्ठ लेखक और दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक हरीश नेवल ने कहा कि ‘आधे-अधूरे’ के सभी पात्र मोहन राकेश के आंतरिक द्वंद्व के प्रतीक हैं जिनका मंचन करते हुए सभी पात्रों के माध्यम से निदेशिका ने संवेदनशीलता का परिचय दिया है। नाटक में पुरुष पात्रों की नाकामी दर्शायी गयी है लेकिन स्त्री पात्रों की वेदना का चित्रण तो कहीं ज़्यादा है क्योंकि पारिवारिक संघर्ष में स्त्री सर्वाधिक दुःख झेलती है। नाटक के कलाकारों ने सभी पात्रों को भली भाँति सजीव किया, वे हैं; दीप्ति शर्मा, पूर्णिमा राज, रितंभरा मित्तल, अमित प्रसाद, आशीष कपूर, मनीष दुबे, मोईज हुसैन, और विजय गौड़। अनिल भगत ने पार्श्व संगीत दिया।

### सम्मेलन-पूर्व राउंड टेबल

#### विषय विषय : हिंदी कक्षाओं में ‘आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस’

सम्मेलन के एक सप्ताह पूर्व हुए ऑन लाइन राउंड टेबल में कृत्रिम बुद्धि (‘आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस’) को हिंदी शिक्षण में अपनाने के उपायों पर चर्चा हुई। 15 अक्टूबर को आयोजित इस कार्य क्रम का संयोजन भाव्या सिंह ने किया जिसमें वेंदरबिल्ट विश्व विद्यालय के इलीयट मैक कार्टर, कशिका सिंह, मिशिगन स्टेट के राजीव रंजन, पेन स्टेट की रितु जयकर आदि प्राध्यापकों ने भाग लिया।